भारत सरकार
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2037
दिनांक 12 फरवरी, 2021 को उत्तर के लिए

वैश्विक पोषण रिपोर्ट

2037. श्री भर्तृहरि महताब :

क्या **महिला और बाल विकास** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने वर्ष 2020 की वैश्विक पोषण रिपोर्ट में भारत की स्थिति का संज्ञान लिया है जो इंगित करती है कि भारत अभी भी सभी संकेतकों के लिए वैश्विक पोषण लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सका है;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है;
(ग) यदि नहीं तो रिपोर्ट का संज्ञान न लिए जाने का क्या कारण है;
(घ) सतत विकास लक्ष्यों के माध्यम से देश भर में वर्ष 2030 तक कुपोषण को समाप्त करने की सरकार की प्रतिबद्धता की वर्तमान स्थिति क्या है;
(ड.) देश में कोविड-19 महामारी के कारण कुपोषण के मामलों में राज्य/संघ राज्य क्षेत्र वार सूचित वृद्धि क्या है; और
(च) कुपोषण के कारण समक्ष आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए/उठाए जा रहे हैं और इसमें क्या उपलब्धियां प्राप्त की गई हैं?

उत्तर

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी महिला एवं बाल विकास मंत्री

(क) से (च) : सरकार ने कुपोषण के मुद्दे को उच्च प्राथमिकता दी है और यह देश में पोषण परिणामों में सुधार लाने के लिए प्रतिबद्ध है और देश में कुपोषण की समस्या के समाधान के लिए लक्षित पहलों के तौर पर अम्ब्रेला समेकित बाल विकास सेवाएं स्कीम (आईसीडीएस) के तहत आंगनवाड़ी सेवाओं, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना और किशोरी स्कीम का कार्यान्वयन करती है।

इसके अलावा, सरकार ने स्वास्थ्य, कल्याण और रोग और कुपोषण के प्रतिरोध को बढ़ावा देने वाली विकसित पद्धतियों पर फोकस करते हुए पोषण सामग्री, प्रदायगी, आउटरीच और परिणामों को सुदृढ़ करने और सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने, पोषण गुणवत्ता में सुधार लाने और प्रत्यायित प्रयोगशालाओं में परीक्षण करने, प्रदायगी को सशक्त बनाने और शासन में सुधार लाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए कदम उठाए गए हैं। सरकार ने राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को यह सुनिश्चित करने की सलाह दी है कि पूरक पोषण की गुणवत्ता खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 और उसके तहत बनाए गए विनियमों के तहत निर्धारित मानकों के अनुरूप हों। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को कुपोषण और संबंधित बीमारियों की रोकथाम के लिए आयुष प्रणालियों के उपयोग को बढ़ावा देने की सलाह दी गई है। पोषण पद्धतियों में पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करते हुए आहार विविधता अंतरालों की पूर्ति के लिए आंगनवाड़ी केंद्रों में पोषण वाटिकाओं के विकास को सहयोग देने का एक कार्यक्रम भी शुरू किया गया है।

*****